डॉ. सरला सिंह "स्निग्धा"

ग़ज़ल

क्षमा भाव उत्तम बताया गया है।
हमें यह निरंतर सिखाया गया है ।।

करें प्रार्थना हम बनें नेक मानव ।
यही मार्ग सबको दिखाया गया है।।

रहें जीव सारे यहाँ पर निडर हो ।
करुण भाव मन में जगाया गया है।।

नहीं डर यहाँ पर किसी को किसी से।
सभी लोग सम हैं सुनाया गया है।।

करे आज मानव नहीं देख हिंसा ये ।
नवल दीप दिल में जलाया गया है।।

करे जो यहाँ पर भरे है उसे कल।
सभी के दिलों में बिठाया गया है।।

बनो बुद्ध जैसे क्षमा भाव वाले ।
सभी ज्ञान उनका लिखाया गया है।।

क्षमा भाव ऊँचा सभी भाव से है।
सदा से यही तो पढ़ाया गया है।।

जीवन सदा दिन रात ये चलता रहा।
दुख भी घना मन में सदा पलता रहा ।।

अपना पराया कब लगा कुछ भी पता।
बस दर्द ये मन को सदा खलता रहा।।

हर पीर को हमने सहा हँसते हुए।
यह भाग्य जाने क्यूँ हमें छलता रहा।।

गति तेज थी कुछ वक्त की हमसे जरा।
पीछे खड़ा बस हाथ ही मलता रहा ।।

जो भी मिले हमको यहाँ थे चार दिन।
वो सब तपिश में रात दिन जलता रहा।।

बन प्रेम पथ के हम पथिक खो से गए।
बस पीर हरपल फूलता फलता रहा ।।

यह वेदना डाले रही डेरा सदा ।
उम्मीद का पंखा समय झलता रहा।।

आशा रही थामे सखी मन का दिया ।
"स्निग्धा" पथिक का हारना टलता रहा।।